# माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा, शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण का सह-संबंधात्मक अध्ययन

(रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विशेष संदर्भ में)

[1]**सपना देवांगन**
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

[2] **प्रो. डॉ. लुभावनी त्रिपाठी**
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

**सार**

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा, शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य विद्यमान सह-संबंध का वैज्ञानिक अध्ययन करना है। यह शोध छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के दस मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा नौ के आठ सौ विद्यार्थियों (चार सौ बालक एवं चार सौ बालिकाएँ) पर आधारित है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग करते हुए तीन मानकीकृत मापनियों के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए। पियर्सन सह-संबंध गुणांक के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण एवं आत्म-अवधारणा के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक सह-संबंध ($r = 0.62$, $p = 0.001$) पाया गया। आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य भी मध्यम धनात्मक सह-संबंध ($r = 0.58$, $p = 0.001$) पाया गया। इसके अतिरिक्त आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य भी सार्थक धनात्मक सह-संबंध ($r = 0.64$, $p = 0.001$) पाया गया। सभी परिणाम 0.05 सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित हैं।

**मुख्य शब्द:** सह-संबंध अध्ययन, आत्म-अवधारणा, शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा, आईसीटी दृष्टिकोण, माध्यमिक शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, पियर्सन सह-संबंध।

## 1. प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक आयामों का अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता एवं व्यक्तित्व विकास को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्म-अवधारणा, शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण – ये तीन ऐसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चर हैं जो आधुनिक शैक्षिक परिवेश में विद्यार्थियों के व्यवहार, अधिगम एवं विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं।

आत्म-अवधारणा व्यक्ति के आत्मबोध, आत्मसम्मान एवं अपनी क्षमताओं के प्रति धारणा का समन्वित रूप है। यह व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार, निर्णय एवं सामाजिक अंतःक्रिया को प्रभावित करती है। माध्यमिक स्तर पर

जब विद्यार्थी किशोरावस्था के संक्रमण काल से गुजरते हैं, आत्म-अवधारणा का विकास उनके व्यक्तित्व निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा वह आंतरिक प्रेरक शक्ति है जो विद्यार्थियों को अपने शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने एवं निरंतर प्रगति करने के लिए प्रेरित करती है। यह प्रेरणा विद्यार्थियों की अध्ययन-निष्ठा, परिश्रम एवं दृढ़ता का आधार है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने इक्कीसवीं सदी की शिक्षा का रूप ही बदल दिया है। संगणक, इंटरनेट, डिजिटल उपकरण एवं ई-लर्निंग मंच आज शिक्षण-अधिगम के अनिवार्य अंग बन चुके हैं। इन तीनों चरों के मध्य सह-संबंध को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यदि ये परस्पर सकारात्मक रूप से संबद्ध हैं, तो किसी एक को सुदृढ़ करने से दूसरे को भी बल मिलेगा।

वर्तमान शोध इसी परिप्रेक्ष्य में रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संदर्भ में इन तीनों चरों के पारस्परिक सह-संबंध का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

## 2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

मार्श (1990) ने अपने अध्ययन में यह प्रमाणित किया कि शैक्षणिक आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य परस्पर सुदृढ़ कारण-कार्य संबंध विद्यमान है। हैटी (1992) ने अपनी समीक्षा में बताया कि आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य सकारात्मक एवं उल्लेखनीय सह-संबंध पाया जाता है।

विगफील्ड एवं एकल्स (2000) ने प्रत्याशा-मूल्य सिद्धांत के माध्यम से प्रमाणित किया कि विद्यार्थियों की अपनी क्षमताओं के प्रति धारणाएँ उनकी उपलब्धि प्रेरणा को सीधे प्रभावित करती हैं। रायन एवं डेसी (2000) ने स्व-निर्धारण सिद्धांत में बताया कि जिन विद्यार्थियों में उच्च आत्म-प्रभावकारिता होती है, उनकी आंतरिक प्रेरणा भी अपेक्षाकृत उच्च होती है।

कॉम्पियो एवं हिगिन्स (1995) ने संगणक आत्म-प्रभावकारिता के सिद्धांत में बताया कि तकनीकी साधनों के प्रति आत्मविश्वास एवं आत्म-अवधारणा के विकास में सकारात्मक संबंध होता है। मूस एवं अज़ेवेडो (2009) ने डिजिटल अधिगम वातावरण में विद्यार्थियों की आत्म-नियामक क्षमता एवं आत्म-अवधारणा के मध्य संबंध को प्रमाणित किया।

झा एवं कुमार (2017) ने प्रमाणित किया कि आईसीटी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक अभिरुचि एवं उपलब्धि प्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। नायर एवं राव (2019) ने केरल के माध्यमिक विद्यालयों में किए गए अध्ययन में पाया कि डिजिटल साक्षरता एवं आत्म-अवधारणा के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक सह-संबंध विद्यमान है।

वर्मा एवं शुक्ला (2020) ने उत्तर प्रदेश के विद्यालयों में किए गए अध्ययन में आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सार्थक सह-संबंध पाया। मिश्रा (2021) ने मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में प्रमाणित किया कि आईसीटी दृष्टिकोण, आत्म-अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा तीनों परस्पर धनात्मक रूप से सह-संबद्ध हैं।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 14, Issue 05 Oct, 2025

पापास्टर्जियो (2010) ने खेल-आधारित डिजिटल शिक्षण में यह पाया कि आईसीटी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों की अधिगम प्रेरणा एवं आत्म-विश्वास दोनों को सुदृढ़ करती है। स्कालविक एवं स्कालविक (2009) ने आत्म-अवधारणा, उपलब्धि प्रेरणा एवं शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य पारस्परिक सह-संबंधात्मक संरचना का विस्तृत विश्लेषण किया।

**3. शोध अंतराल**

संबंधित साहित्य की समीक्षा यह स्पष्ट करती है कि आत्म-अवधारणा, शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी दृष्टिकोण के द्विचरीय सह-संबंध पर कुछ अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु निम्नलिखित अंतराल स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं:

प्रथमतः, तीनों चरों का एक साथ त्रिचरीय सह-संबंधात्मक अध्ययन, विशेषतः छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में, उपलब्ध नहीं है। द्वितीयतः, शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के मिश्रित प्रतिदर्श पर किए गए सह-संबंधात्मक अध्ययन अत्यंत सीमित हैं। तृतीयतः, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के डिजिटल शिक्षा एजेंडे के परिप्रेक्ष्य में ये तीनों चर किस प्रकार परस्पर संबद्ध हैं, इसकी वैज्ञानिक जाँच अपेक्षित है। प्रस्तुत शोध इन्हीं अंतरालों की पूर्ति करने का प्रयास है।

**4. शोध पद्धति**

**4.1 शोध के उद्देश्य**

उद्देश्य 1: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य विद्यमान सह-संबंध का अध्ययन करना।

उद्देश्य 2: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य विद्यमान सह-संबंध का अध्ययन करना।

**4.2 शून्य परिकल्पनाएँ**

शून्य परिकल्पना 1: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य कोई सार्थक सह-संबंध नहीं पाया जाएगा।

शून्य परिकल्पना 2: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य कोई सार्थक सह-संबंध नहीं पाया जाएगा।

**4.3 शोध विधि**

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि अंतर्गत सह-संबंधात्मक अनुसंधान प्रारूप का उपयोग किया गया है। सह-संबंधात्मक शोध प्रारूप में दो या अधिक चरों के मध्य विद्यमान संबंध की प्रकृति एवं मात्रा का वैज्ञानिक आकलन किया जाता है।

**4.4 जनसंख्या एवं प्रतिदर्श**

Ijfans International Journal Of Food And Nutritional Sciences
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 14, Issue 05 Oct, 2025

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षणिक सत्र 2024-25 में कक्षा नौ में अध्ययनरत 14,860 विद्यार्थी हैं। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि के माध्यम से दस विद्यालयों से आठ सौ विद्यार्थियों (चार सौ बालक एवं चार सौ बालिकाएँ) का प्रतिदर्श चयनित किया गया।

**सारणी क्रमांक 1**

**प्रतिदर्श का विस्तृत विवरण**

| क्र.सं. | विद्यालय का नाम | बालक | बालिकाएँ | कुल |
|---|---|---|---|---|
| 1 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्र.1, रायपुर | 40 | 40 | 80 |
| 2 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्र.2, रायपुर | 40 | 40 | 80 |
| 3 | श्रद्धानंद माध्यमिक विद्यालय, रायपुर | 40 | 40 | 80 |
| 4 | संत ज्ञानेश्वर माध्यमिक विद्यालय, रायपुर | 40 | 40 | 80 |
| 5 | सचदेवा इंटरनेशनल स्कूल, रायपुर | 40 | 40 | 80 |
| 6 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय, आरंग | 40 | 40 | 80 |
| 7 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय, अभनपुर | 40 | 40 | 80 |
| 8 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय, तिल्दा | 40 | 40 | 80 |
| 9 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय, धरसीवा | 40 | 40 | 80 |
| 10 | शासकीय माध्यमिक विद्यालय, मंदिर हसौद | 40 | 40 | 80 |
| | कुल | 400 | 400 | 800 |

**4.5 शोध उपकरण एवं उनकी विशेषताएँ**

**सारणी क्रमांक 2**

**शोध उपकरणों का विवरण**

| उपकरण का नाम | निर्माता | कथन संख्या | विश्वसनीयता |
|---|---|---|---|
| आत्म-अवधारणा मापनी | डॉ. आर. के. सारस्वत | 48 | 0.91 |
| उपलब्धि प्रेरणा मापनी | डॉ. टी. आर. शर्मा | 38 | 0.697 |

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

| | | | |
|---|---|---|---|
| आईसीटी दृष्टिकोण मापनी | डॉ. आशा शर्मा एवं डॉ. वि.कु. त्रिपाठी | 56 | 0.77 |

**4.6 आँकड़ा संकलन**

शोधकर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से चयनित विद्यालयों में जाकर विद्यालय प्रशासन की लिखित अनुमति प्राप्त की गई। विद्यार्थियों को शोध के उद्देश्य एवं उत्तरों की गोपनीयता के बारे में जानकारी दी गई। तीनों मापनियाँ एक ही बैठक में सामूहिक रूप से प्रशासित की गईं।

**4.7 सांख्यिकीय तकनीक**

चरों के मध्य सह-संबंध ज्ञात करने हेतु पियर्सन उत्पाद आघूर्ण सह-संबंध गुणांक का उपयोग किया गया। माध्य एवं मानक विचलन की गणना की गई। सभी परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किए गए।

**5. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

**5.1 तीनों चरों की वर्णनात्मक सांख्यिकी**

**सारणी क्रमांक 3**

**तीनों चरों की वर्णनात्मक सांख्यिकी (N = 800)**

| चर | न्यूनतम | अधिकतम | माध्य | मानक विचलन |
|---|---|---|---|---|
| आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण | 38 | 112 | 78.50 | 8.20 |
| आत्म-अवधारणा | 112 | 228 | 165.40 | 18.60 |
| शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा | 10 | 38 | 26.80 | 5.40 |

**आरेख क्रमांक 1**

**तीनों चरों के माध्य की प्रतिशत स्थिति**

प्रतिशत मान = (माध्य / अधिकतम मापनी मान) × 100

### 5.2 उद्देश्य 1 के अनुसार विश्लेषण: आत्म-अवधारणा एवं आईसीटी दृष्टिकोण का सह-संबंध

विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य पियर्सन सह-संबंध गुणांक की गणना की गई। परिणाम निम्न सारणी में प्रस्तुत हैं:

**सारणी क्रमांक 4**

**आत्म-अवधारणा एवं आईसीटी दृष्टिकोण का सह-संबंध विश्लेषण**

| चर युग्म | N | सह-संबंध (r) | निर्धारण गुणांक ($r^2$) | पी-मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| आईसीटी दृष्टिकोण × आत्म-अवधारणा | 800 | 0.62 | 0.38 | 0.001 | सार्थक |

सार्थकता स्तर: 0.05 | r = 0.62 मध्यम धनात्मक सह-संबंध

सारणी 4 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आईसीटी दृष्टिकोण एवं आत्म-अवधारणा के मध्य सह-संबंध गुणांक $r = 0.62$ प्राप्त हुआ है। निर्धारण गुणांक $r^2 = 0.38$ बताता है कि आत्म-अवधारणा में 38 प्रतिशत भिन्नता आईसीटी दृष्टिकोण द्वारा स्पष्ट की जा सकती है। पी-मूल्य 0.001 है जो 0.05 सार्थकता स्तर से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है।

**आरेख क्रमांक 2**

**आईसीटी दृष्टिकोण के स्तरानुसार आत्म-अवधारणा का औसत**

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 14, Issue 05 Oct, 2025

धनात्मक प्रवृत्ति: आईसीटी दृष्टिकोण बढ़ने के साथ आत्म-अवधारणा भी बढ़ती है

**5.3 उद्देश्य 2 के अनुसार विश्लेषण: शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी दृष्टिकोण का सह-संबंध**

विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य पियर्सन सह-संबंध गुणांक की गणना की गई। परिणाम निम्न सारणी में प्रस्तुत हैं:

**सारणी क्रमांक 5**

**शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी दृष्टिकोण का सह-संबंध विश्लेषण**

| चर युग्म | N | सह-संबंध (r) | निर्धारण गुणांक ($r^2$) | पी-मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| आईसीटी दृष्टिकोण × उपलब्धि प्रेरणा | 800 | 0.58 | 0.34 | 0.001 | सार्थक |

सार्थकता स्तर: 0.05 | r = 0.58 मध्यम धनात्मक सह-संबंध

सारणी 5 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आईसीटी दृष्टिकोण एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सह-संबंध गुणांक $r = 0.58$ प्राप्त हुआ है। निर्धारण गुणांक $r^2 = 0.34$ बताता है कि शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा में 34 प्रतिशत भिन्नता आईसीटी दृष्टिकोण द्वारा स्पष्ट की जा सकती है। पी-मूल्य 0.001 है जो 0.05 सार्थकता स्तर से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 2 अस्वीकृत की जाती है।

**आरेख क्रमांक 3**

**आईसीटी दृष्टिकोण के स्तरानुसार उपलब्धि प्रेरणा का औसत**

### 5.4 तीनों चरों का पारस्परिक सह-संबंध आव्यूह

**सारणी क्रमांक 6**

**तीनों चरों का पारस्परिक सह-संबंध आव्यूह (N = 800)**

| चर | आईसीटी दृष्टिकोण | आत्म-अवधारणा | उपलब्धि प्रेरणा |
|---|---|---|---|
| आईसीटी दृष्टिकोण | 1.00 | 0.62** | 0.58** |
| आत्म-अवधारणा | 0.62** | 1.00 | 0.64** |
| उपलब्धि प्रेरणा | 0.58** | 0.64** | 1.00 |

** $p < 0.001$ (0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक)

**आरेख क्रमांक 4**

**तीनों चरों के सह-संबंध गुणांकों का तुलनात्मक दण्ड आरेख**

सभी सह-संबंध मध्यम स्तर के धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक

### 5.5 परिकल्पनाओं के परीक्षण का सारांश

**सारणी क्रमांक 7**

**परिकल्पनाओं के परीक्षण का सारांश**

| परिकल्पना | r मूल्य | $r^2$ | पी-मूल्य | सार्थकता | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| शून्य परिकल्पना 1 (आत्म-अवधारणा × आईसीटी) | 0.62 | 0.38 | 0.001 | 0.05 पर सार्थक | अस्वीकृत |
| शून्य परिकल्पना 2 (उपलब्धि प्रे. × आईसीटी) | 0.58 | 0.34 | 0.001 | 0.05 पर सार्थक | अस्वीकृत |

## 6. परिणाम

परिणाम 1: विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सह-संबंध ($r = 0.62, p = 0.001$) पाया गया। शून्य परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम 2: विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सह-संबंध ($r = 0.58, p = 0.001$) पाया गया। शून्य परिकल्पना 2 अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम 3: आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सर्वाधिक सह-संबंध ($r = 0.64, p = 0.001$) पाया गया, जो इन दोनों मनोवैज्ञानिक चरों की परस्पर घनिष्ठता को प्रमाणित करता है।

परिणाम 4: तीनों चरों का औसत स्तर संतोषजनक पाया गया – आईसीटी दृष्टिकोण (माध्य = 78.50), आत्म-अवधारणा (माध्य = 165.40), शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा (माध्य = 26.80)।

## 7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण, आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य परस्पर धनात्मक एवं सार्थक सह-संबंध विद्यमान है।

आईसीटी दृष्टिकोण एवं आत्म-अवधारणा के मध्य प्राप्त सह-संबंध ($r = 0.62$) यह बताता है कि तकनीकी साधनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं सकारात्मक आत्म-बोध के विकास में सहायक है। आईसीटी दृष्टिकोण एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा का सह-संबंध ($r = 0.58$) यह प्रमाणित करता है कि डिजिटल शिक्षण के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति विद्यार्थियों में लक्ष्य-उन्मुखता, परिश्रम एवं उत्कृष्टता की आकांक्षा को भी प्रेरित करती है।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सबसे उच्च सह-संबंध (r = 0.64) पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सकारात्मक आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा एक-दूसरे को पारस्परिक रूप से सुदृढ़ करते हैं। इस प्रकार तीनों चर एक परस्पर संबद्ध मनोवैज्ञानिक संरचना का निर्माण करते हैं।

## 8. शैक्षणिक निहितार्थ

प्रथमतः, चूँकि आईसीटी दृष्टिकोण, आत्म-अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा परस्पर सह-संबद्ध हैं, इसलिए विद्यालयों में ऐसे एकीकृत कार्यक्रम विकसित किए जाएँ जो तीनों आयामों का एक साथ विकास करें। सूचना प्रौद्योगिकी-समृद्ध शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

द्वितीयतः, पाठ्यक्रम निर्माताओं को पाठ्यचर्या डिज़ाइन में ऐसी गतिविधियाँ सम्मिलित करनी चाहिए जो एक साथ विद्यार्थियों में डिजिटल जागरूकता, आत्मविश्वास एवं उपलब्धि की आकांक्षा को प्रोत्साहित करें। परियोजना-आधारित डिजिटल अधिगम एवं सहयोगात्मक ऑनलाइन गतिविधियाँ इस दृष्टि से उपयोगी हैं।

तृतीयतः, विद्यालय परामर्श सेवाओं में आईसीटी दृष्टिकोण, आत्म-अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जिन विद्यार्थियों में किसी एक चर में कमी पाई जाए, उनके लिए विशेष हस्तक्षेप कार्यक्रम चलाए जाएँ।

चतुर्थतः, नीति निर्माताओं को रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में ग्रामीण विद्यालयों में आईसीटी अवसंरचना का विकास प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम विद्यार्थियों के समग्र मनोवैज्ञानिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

पंचमतः, शिक्षकों को परामर्शदाता की भूमिका में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। आत्म-अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा में कमी आने पर विद्यार्थियों को आईसीटी-आधारित सफलता के अनुभव प्रदान कर उन्हें प्रेरित किया जा सकता है।

## 9. संदर्भ सूची

- बंडूरा, ए. (1997). सेल्फ-एफिकेसी: द एक्सरसाइज ऑफ कंट्रोल। डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन।
- कॉम्पेउ, डी. आर., एवं हिगिन्स, सी. ए. (1995). कंप्यूटर आत्म-प्रभावकारिता: एक माप के विकास और प्रारंभिक परीक्षण। एमआईएस क्वार्टरली, 19(2), 189–211। https://doi.org/10.2307/249688
- हैटी, जे. (1992). सेल्फ-कॉन्सेप्ट। लॉरेंस एरल्बाम एसोसिएट्स।
- झा, ए., एवं कुमार, आर. (2017). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा। इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 7(4), 62–74।
- मार्श, एच. डब्ल्यू. (1990). शैक्षणिक आत्म-अवधारणा की संरचना: मार्श/शैवेल्सन मॉडल। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 82(4), 623–636। https://doi.org/10.1037/0022-0663.82.4.623



IJFANS
International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

- शिक्षा मंत्रालय, भारत। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।
- मिश्रा, जी. (2021). मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में आईसीटी अभिवृत्ति, आत्म-अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा का सहसंबंधात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी एंड रिसर्च, 9(2), 112–128।
- मूस, डी. सी., एवं अज़ेवेडो, आर. (2009). कंप्यूटर-आधारित अधिगम परिवेशों के साथ अधिगम: कंप्यूटर आत्म-प्रभावकारिता पर साहित्य की समीक्षा। रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 79(2), 576–600। https://doi.org/10.3102/0034654308326083
- नायर, एस., एवं राव, वी. (2019). डिजिटल साक्षरता, आत्म-अवधारणा और शैक्षिक उपलब्धि: केरल के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का एक सहसंबंधात्मक अध्ययन। केरल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 12(1), 45–60।
- पापास्टरजियू, एम. (2010). कंप्यूटर साक्षरता पाठ्यक्रम के माध्यम से शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति आत्म-प्रभावकारिता और अभिवृत्तियों का संवर्धन। कम्प्यूटर्स एंड एजुकेशन, 54(1), 298–308। https://doi.org/10.1016/j.compedu.2009.08.015
- रायन, आर. एम., एवं डेसी, ई. एल. (2000). आत्म-निर्धारण सिद्धांत तथा आंतरिक प्रेरणा, सामाजिक विकास और कल्याण की सुविधा। अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 55(1), 68–78। https://doi.org/10.1037/0003-066X.55.1.68
- सरस्वत, आर. के. (1984). सेल्फ-कॉन्सेप्ट क्वेश्चनेयर (एससीएस-आरकेएस)। नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।
- शर्मा, ए., एवं त्रिपाठी, वी. के. (2015). स्कूल शिक्षण में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति मापनी (एएसटीआईसीटीएस)। लेखक।
- शर्मा, टी. आर. (2006). अकादमिक अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट (एएएमटी-एसटी)। साइको सेंटर।
- स्काल्विक, ई. एम., एवं स्काल्विक, एस. (2009). गणित में आत्म-अवधारणा और आत्म-प्रभावकारिता: गणितीय प्रेरणा और उपलब्धि के साथ संबंध। जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 3, 255–278।
- यू-डाइस+ (2024–25). यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। https://udiseplus.gov.in
- वर्मा, पी., एवं शुक्ला, ए. (2020). आत्म-अवधारणा और शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा: उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का एक सहसंबंधात्मक अध्ययन। इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 58(1), 38–52।
- विगफील्ड, ए., एवं एक्लेस, जे. एस. (2000). उपलब्धि प्रेरणा का अपेक्षा-मूल्य सिद्धांत। कॉन्टेम्परारी एजुकेशनल साइकोलॉजी, 25(1), 68–81। https://doi.org/10.1006/ceps.1999.1015